स्नातक–हिन्दी–प्रतिष्ठा, प्रथम खण्ड, द्वितीय पत्र

काव्य के रूप

– डॉ॰ मुन्ना साह

काव्य वह वाक्य रचना है जिसमें सार्थक शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों पर प्रभाव डाला जाता है। साथ ही रस, छंद और अलंकारों के द्वारा लयबद्ध किया जाता है। इस प्रकार छंदबद्ध रचना को काव्य कहते हैं।

आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में कहें तो – **"वाक्यं रसात्मकम् काव्यं"** अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है।

काव्य के मुख्यतः दो भेद होते हैं – **1. श्रव्य काव्य**

2. दृश्य काव्य

1. श्रव्य काव्य

जिस काव्य को पढ़ने या सुनने से आनंद की प्राप्ति होती है उसे श्रव्य काव्य कहते हैं। श्रव्य काव्य के दो भेद माने गए हैं – 1. प्रबंध काव्य 2. मुक्तक काव्य

(1). प्रबंध काव्य – श्रृंखलाबद्ध कथात्मक काव्य रचना को प्रबंध काव्य कहते हैं। इसके दो भेद होते हैं – 1. महाकाव्य 2. खण्ड काव्य

1. महाकाव्य – जिस काव्य रचना में किसी महापुरूष के जीवन का सम्पूर्ण चित्रण किया गया हो, वह महाकाव्य कहलाता है। महाकाव्य में श्रृंगार, शांत एवं वीर रस में से किसी एक रस की प्रधानता होती है। महाकाव्य सर्गबद्ध होता है, कम से कम आठ सर्ग होना चाहिए। उसका प्रमुख पात्र उदात् चरित्र वाला कई विशेषताओं से पूर्ण होता है। जैसे – जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित "कामायनी"

2. खण्ड काव्य – जिस काव्य रचना में कथात्मक जीवन के किसी एक व्यक्ति, एक घटना या मार्मिक अनुभूति का पूर्णता के साथ चित्रण किया गया हो उसे खण्ड काव्य कहते हैं। यह सीमित आकार में पूर्ण रचना होती है। जैसे – "जयद्रथ वध"

(2). मुक्तक काव्य – एक अनुभूति, एक ही भाव एवं एक कल्पना चित्रण किया जाए तो वह मुक्तक काव्य कहलाता है। प्रत्येक छंद स्वयं में पूर्ण होता है। शब्द सरल एवं स्पष्ट होते हैं।

जैसे – बिहारी का दोहा – "मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय। जा तन की झांई परे, स्याम हरित दुति होय।।"

मुक्तक के दो भेद होते हैं – 1. पाठ्य मुक्तक 2. गेय मुक्तक

1. पाठ्य मुक्तक – इसमें विषय की प्रधानता होती है, प्रसंग के अनुसार भाव एवं कल्पना का चित्रण किया जाता है।

2. गेय मुक्तक – इसे गीति काव्य भी कहते हैं। इसमें भाव, सौंदर्यबोध, अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता एवं लयात्मकता की प्रधानता होती है।

2. दृश्य काव्य

इस काव्य का आनंद मंच पर अभिनित होते देखकर लिया जाता है। वस्तुतः इस काव्य भेद से कानों की अपेक्षा दर्शन में अधिक चमत्कार होता है इसलिए यह दृश्यकाव्य कहा जाता है। जैसे – कालिदास का "मेघदूत"

दृश्य काव्य के दो भेद होते हैं – 1. रूपक 2. उपरूपक

1. रूपक – रंगमंच पर की जाने वाली प्रस्तुति पात्रों की वेशभूषा व अभिनय के द्वारा अधिक प्रभावशाली, बोधगम्य व सरस होती है, तो उसे काव्य की भाषा में रूपक कहते हैं। ये दस प्रकार के होते हैं– 1. नाटक, 2. प्रकरण, 3. भाण, 4. प्रहसन, 5. व्यायोग, 6. समवकार, 7. डिम, 8. ईहामृग, 9. अंक, 10. बीथी

2. उपरूपक – जब नाटक कवि कल्पित हो एवं उसमें स्त्री पात्रों का बाहुल्य हो तो वह नाटिका का रूप धारण कर लेता है तथा उपरूपक कहलाता है। उसी प्रकार विलासिका नामक उपरूपक में शृंगार रस प्रधान होता है। उपरूपक के अट्ठारह भेद माने गये हैं – नाटिका, त्रोटक, गोष्ठी, सदृक, नाट्यरासक, प्रस्थान, उल्लासटय, काव्य, प्रेक्षण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिंपल, विलासिका, दुर्मल्लिका, परकणिका, हल्लीशा और भणिका।

———————————————— ••• ————————————————